अतिथि संपादकीय

अरुणाचल प्रदेश अंक : सुख-दु:खे समे कृत्वा

"खुली छतों के दियें कब के बुझ गये होते,

कोई तो है जो हवाओं के पर कतरता है।" (वसीम वरेलवी)

यही हकीकत है। 'कंचनजंघा' पत्रिका के संपादक डॉ. प्रदीप त्रिपाठी और प्रो. देवराज जी मेरे संबल का मुख्य आधार बने। परिणामस्वरूप अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित यह विशेष अंक आप सबके समक्ष प्रस्तुत है। मनुष्य होने के नाते लिखना और पढ़ना सबसे बड़ा सत्कर्म है। ऐसा कर हम अपने इंसान बने रहने की पुष्टि करते हैं। स्वयं से यह जान पाते हैं कि हमारी सीमाएँ क्या हैं और पहुँच भी।

यह अंक हिंदुस्तानी भूगोल और देशज समाज-संस्कृति को पूर्वोत्तर की आँख से जानने-समझने का विनम्र प्रयास मात्र है। यद्यपि यह अंजुरी भर सच है, जहाँ से अरुणाचल प्रदेश की खिड़की खुलती है। अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित यह अंक कंचनजंघा पत्रिका का पूर्वोत्तर के साथ अपने अंत:संबंधों का निर्वाह और विस्तार दोनों है।

हाल के वर्षों में अरुणाचल प्रदेश का लेखकीय संसार हिंदी भाषा में बेहद समृद्ध हुआ है। इस प्रदेश की रचनात्मकता राष्ट्रीय स्तर पर अपनी मौलिक पहचान के साथ उपस्थित हुई है, जिस ओर हिंदी समाज का ध्यान गया है। अरुणाचल प्रदेश का लेखक-वर्ग परस्पर परिचित और सम्मानित भी हुआ है। अब हिंदी के पाठक इस प्रदेश के रचनाकारों से परिचित हैं या उनका ध्यान जा रहा है, तो यहाँ के रचनाकार भी हिंदी भाषी लेखकों और पाठकों से सीधे मेल-मिलाप और साक्षात्कार कर पा रहे हैं। यह रचनात्मक घोल या मिश्रण बनाने में 'कंचनजंघा' पत्रिका का उद्यम काफी अधिक रहा है, यह मैं मानता हूँ। डॉ. प्रदीप त्रिपाठी जी के मन में अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित विशेष अंक निकालने का विचार आया और उन्होंने यह जिम्मेदारी मुझे सौंपी, तो मुझे ठीक ही लगा। यह संपादन कार्य करने का सुख मैंने बटोरा है और यश भी पाया है। मेरा विश्वास आलोचनात्मक विवेक और खरी-खरी कहने-सुनने पर अधिक रहा है। अतएव, सुधि पाठक इस अंक को अपना मान स्वीकार करेंगे और पढ़ेंगे, सुझाव और मंतव्यों से अवगत कराएँगे। मुझे अपने इस संयोजन से इतनी अपेक्षा तो जरूर रखनी चाहिए।

मुझे अरुणाचल प्रदेश में रहते कई वर्ष हुए। मैं अपनी आँखों के भरोसे से कुछ बात कहना चाहता हूँ। अरुणाचल प्रदेश 28 जिलों से मिलकर बना एक हरित प्रदेश है। यह राज्य मुख्यत: वन क्षेत्र से आच्छदित भू-भाग है, जिसकी अंतरराष्ट्रीय सीमा चीन, भूटान और म्यांमार देशों से लगी हुई हैं। यह प्रदेश नदी, घाटी, पहाड़, वनस्पति, वन्यजीव, पशु-पक्षी, बारिश, धूप, बर्फ, आदिवासीजन से भरा-पूरा है। 'दोन्यी पोलो' का

यह प्रदेश प्रकृतिजीवी होने का इश्तहार नहीं करता है, बल्कि यहाँ के लोगों की निर्मिति ही इस तरह हुई है कि अरुणाचलवासी प्रकृति से अलग करके खुद को देख ही नहीं सकते हैं। जैसे आबोतानी की पुरखाई परंपरा के बिना उनकी कोई पहचान, अस्मिता, इतिहास-बोध, स्मृति, सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत आदि की कल्पना नहीं की जा सकती है; वैसे ही प्रकृति उनके स्वदेशी आस्था का केंद्र और उनकी वाचिक परंपरा और लोक-साहित्य का सच्चा कोठार है। इस लोक साहित्य में पुरा कथाएँ, पुरा अनुभव, मिथकीय स्मृतियाँ, आनुष्ठानिक संस्कार बहुतायत मिलते हैं। दरअसल, लोक-साहित्य के बारे में गहन समझ और गहरी पैठ के लिए जनजातीय ज्ञान परंपरा से जुड़ाव जरूरी है। यह जुड़ाव आदिवासी-जन के मूल्यवान अतीत और उसमें व्याप्त बौद्धिक संपदा से परिचय कराता है। यह परिचय भारत बोध के आदिम इतिहास और मिथकीय चेतना का पुरा-अनुभव भी है जो भारतीय लोक विद्या और लोक साहित्य में प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। स्थानीय समाज के अगुआ के रूप में तानी समुदाय का पुरखा पूर्वज आबोतानी हैं। आबोतानी की साहसिक योग्यता और बुद्धिमत्ता के साथ जुड़ी मानवीय दुर्बलताओं के बारे में तानी समुदाय एक दार्शनिक अवधारणा भी संजोये हुए है जिसे 'तानी दर्शन' कहा जाता है। अरुणाचली लोक साहित्य में भिन्न-भिन्न पात्रों की बेजोड़ उपस्थिति है जो नैतिक आदर्श और मूल्यों का संवृत्त रचते हैं।

उदाहरण के लिए न्यीशी जनजाति के लोक साहित्य को देखें, तो लिन्खी सोज और मीरी सोज शिकारी हैं जिनकी वीरता और शिकार-कौशल के बारे में न्यीशी लोक-कथा के माध्यम से बताया जाता है। दोजोंग याशिंग के बारे में न्यीशी समुदाय चर्चा करते हुए बताता है कि यह एक आत्मा है। इसी तरह ताई बिदा के बारे में दिलचस्प बात सुनने को मिलती है कि वह एक अमीर आदमी था। अमीर इस मामले में कि उसके पास मिथुन के बड़े झुंड थे। अरुणाचली लोक कथाओं में इसी तरह बरम दीमिन का नाम आता है जो एक जिद्दी लड़की थी। वह अपने जिद्दीपन के कारण जंगल में एक बरगद के पेड़ की जड़ों के बीच में फंस जाती है। इसी तरह बर्ज बर्ज नामक एक सुंदर युवती की कथा है, जो अपने माता-पिता की सलाह को न मान एक बड़े पत्थर के बीच फंसकर अपना दम तोड़ देती है। जरपू तेचि एक साहसी युवा लड़की है, जो किसी से नहीं डरती है। उसकी निर्भीकता के बारे में बताते हुए न्यीशी समुदाय गर्व-बोध से भर जाता है। पोबर एक गरीब भाई है, जिसे अपनी छोटी बहन से बहुत प्रेम है और उसकी बड़ी चिंता करता रहता है। जरी एक गरीब बहन है, जो अपने बड़े भाई की शादी को लेकर हमेशा चिंतित रहती थी। रुमियांग एक बुद्धिमान आदमी है और उसकी बुद्धिमत्ता की सभी प्रशंसा करते हैं। तोदू तोखू एक आत्मा का नाम है तो तुकी एक शिकारी है, जो अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करता है। काद और कागर शिकारी हैं, जो अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शिकार करते हैं। बरिलूरा एक चतुर लड़का है, जिसकी चतुराई के किस्से न्यीशी समुदाय चाव से सुनाते हैं। आपापल्ली एक नरभक्षी बूढ़ा है, जिसके बारे में जानना रोचक है। पोईतालो एक ऐसा व्यक्ति है, जो अपने ही दोस्त से बहुत जलता है। नियोतालो की साहसिक कहानी प्रसिद्ध है जिसने पेता-लाबरा को मारा था। निम्यो आबोतानी की बेटी है और तलंग आबोतानी की बेटी निम्यो की पति है। ये कुछ रोचक नाम भर नहीं हैं, बल्कि अरुणाचल प्रदेश की लगभग सभी जनजातियों और उनकी

उप-जनजातियों में ऐसे अनगिनत कथानक, कथावस्तु और कथा-प्रसंग मिलते हैं जिनका दृष्टांत रोचक और वृत्तांत सुखकर बहुत है।

लोक-साहित्य की दृष्टि से अरुणाचल प्रदेश का पुरखा हिमालय अपनेआप में ऐतिहासिक है। इस हिमालय में बसे अरुणाचली जनसमुदाय का इतिहास लिखित नहीं है, लेकिन ऐतिहासिक साक्ष्यों की मौजूदगी के ढेरों प्रमाण बिखरे पड़े हैं। यह देशकाल अपनी प्राचीनता में ई.पू. से 1200 ई. तक वर्णित एवं उल्लिखित है। असम का बुरंजी ग्रंथ इसका उदाहरण है। समाजविज्ञानी एवं अध्येता डॉ. भिक्षु कौण्डिन्य ने अपनी किताब 'अरुणाचल का खाम्ति समाज साहित्य' में इस पर विस्तार से चर्चा की है। चीन, तिब्बत और बर्मा का भारत के उत्तर-पूर्व से संबंध प्रमुख है। बौद्ध धर्म के अलावे बर्मा के गोदना कला का प्रभाव अरुणाचल प्रदेश में आज भी देखा जा सकता है। सन् 1826 ई. का एन्दायबू की संधि अहोम शासित अरुणाचल प्रदेश के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण है, जिसके बाद शासन का अधिकार ब्रिटिशों को हस्तांतरित हो गया। अरुणाचल प्रदेश की जनजातियों द्वारा विरोध अथवा विद्रोह किए जाने का क्रमवार उल्लेख ऐतिहासिक दस्तावेजों में मिलता है जिसका अंग्रेजों ने चालाकीपूर्वक हल निकाला, उन पर दबाव डालकर प्रत्यक्ष न सही परोक्ष ढंग से अपने अधीन बनाए रखा। पुरातत्त्व के आचार्य इस प्रदेश की प्राचीनता को भारत की गौरववर्णी सभ्यता का केंद्रक मानते हैं और इसे 'उदयाद्रि' पुकारते हैं। अरुणोदय की इस भूमि में 'दोङ' वह स्थल है जहाँ सूर्यकिरण का सबसे पहले आगमन होता है। अरुणाचल प्रदेश प्राकृतिक रूप से चेतस है। लोकास्था में प्रकृतिजीवी है। नदियों में 'सांग्पो' का इतिहास पुराना है जो असम में उतरकर ब्रह्मपुत्र कहलाती है। अरुणाचल प्रदेश की पहचान पेड़ भी हैं। बाँस तो जैसे इनकी सहज खुराक है। इसके अलावे लंबे और झमठार पेड़ हैं। अलग-अलग नाम-होलोंग, नाहर, बम्बू, मुदरी, कोम्पे, तोको पात, उनतरा, ताम, तरू, संलार, तापिल, कोमकेर, मुद्री, बअला, तरिकाम। हिंदी में अमरूद को 'मुद्री' कहा जाता है। कटहल को 'बअला', तो बाँस को 'अह' कहा जाता है। अरुणाचल प्रदेश में आम, अमरूद, नीम, कटहल, अनन्नाश, संतरा, सेब, केला आदि खूब देखने को मिल जाते हैं। इस पहाड़ी प्रदेश के त्योहार मनभावन हैं। इनके नाम हैं- न्योकुम, लोंग्ते, सोलुंग, मोपिन, मोह मोल, सी-दोन्यी, लोसर, रेह, द्रि, तमलाडू, चालोलोकू, एतोर, उईंग आरान, पोदी बार्बी, बूरी बूत, खिकसबा इत्यादि। त्योहार के मैदान यानी ग्राउंड यहाँ अपना महत्व रखते हैं- मोपिन ग्राउंड, सोलुंग ग्राउंड, न्योकुम ग्राउंड आदि। न्यीशी जनजाति का न्योकुम त्योहार और इस मौके पर गाया जाने वाला खास गीत 'रिकमपादा' सुनिए। 'जाजिन जा' गुनगुनाइए। एकदम अलग अहसास होगा। अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी लोकगीत के स्वर लुभा लेंगे, नएपन का अहसास जरूर होगा। पल भर के लिए सुध-बुध खो देना क्या कम है। कई चर्चित लोक-गायक और गायिका हैं- देलोंग पादुंग, मोगे दोजी, दागजुंग जुगली, चोरूम मुगली, दोमिन कारबाक, हिपु जोसेफ इत्यादि। इन लोक-कलाकारों के गीत और बोल अपनी परंपरा और संस्कृति से जुड़े होने के अहसास से भर देते हैं।

आदिवासी जीवन में गीतों का पाँव के थिरकन से बहुत मेल है। यहाँ हर अहसास को गहराई से जीने और उसमें रंगने का न्योता 'नृत्य' है। अस्तु, यहाँ का लोक-परिवेश बेहद आत्मीय और समूह-मन

लिए हुए है। खेती-किसानी में मेल-मिलाप और परस्पर सहयोग बहुत है। गालो जनजाति में पानी खेती को 'इसरींग' कहा जाता है, तो आदी जनजाति में झूम खेती को 'आदि आरिक'। इस प्रदेश में भाषा-बोली की विविधता बहुत है। यहाँ के सुदूर सीमा से सटे ग्रामवासी स्वागत के लिए शब्द 'जय हिंद' बोलते हैं, तो स्वाधीनता आंदोलन के साक्षी रहे 'अबोर-हिल्स' मशहूर बहुत है। इसी तरह 'पटकाई हिल्स', 'मिश्मी हिल्स', 'लाल आने हिल्स', 'नक्शा हिल्स', 'जीरो पठार' इत्यादि को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। यहाँ के रहवासियों का सामाजिक-सांस्कृतिक बोध गहरा है।

यहाँ की पारिस्थितिकी को देखें, तो वन्य, जीव, पशु, पक्षी, नदी, घाटी, पहाड़, हवा, बतास आदि का प्रकृति में समाहार लौकिक और प्रत्यक्ष है। सूर्य और चंद्रमा की उपासना का विधान बहुविध है तो अनुषंगी कार्यकलापों में खेती-किसानी सर्वश्रेष्ठ है। यहाँ भी अन्न की पालिका और जंगल के पालक हैं जिनके प्रति श्रद्धा और विश्वास बहुत है। इन प्रकृति अराध्यों को पर्व-त्योहार के अवसर पर विशेष रूप से स्मरण किया जाता है तथा इनसे सामूहिक मंगल, सुख, समृद्धि आदि की प्रार्थना की जाती है। मिथुन अरुणाचल प्रदेश का राजकीय पशु है जो अपनी बनावट और आकृति में गाय और भैस की तरह होता है, लेकिन उसके जैसा बिल्कुल नहीं है। अरुणाचल प्रदेश में मिथुन का आनुष्ठानिक महत्त्व बहुत अधिक है। इसे न्यीशी जनजाति में 'सब'/'सबे' के नाम से जानते हैं, वहीं आदी जनजाति इसको 'एसो' कहती है। इसी तरह तवांग क्षेत्र में याक पशु देखने को मिलते हैं। तवांग परिक्षेत्र मोंपा जनजाति का है जिनके अनन्य अराध्य बुद्ध हैं। सत्य और अहिंसाप्रिय बुद्ध की सेवा अरुणाचलवासियों ने पूर्ण आस्था और भक्ति-भावना से की है। आज भी अरुणाचल प्रदेश में बुद्ध लोकास्था के केंद्र हैं, शीर्ष पर विराजमान हैं।

अरुणाचल का लेखकीय समाज आदिवासी चेतना एवं मानवीय संवेदना से लैस है। सृजन-कला और अपनी रचनात्मकता को उभारने में लगातार प्रयत्नशील है। अरुणाचल प्रदेश सरकार के आईपीआर डिपार्टमेंट ने वर्ष 2018 में 'अरुणाचल लिट फेस्टिवल' मनाने का निर्णय लिया, तो वरिष्ठ साहित्यकार येशे दोरजी थोङची एवं ममाङ दाई इसकी अगुवाई कर रहे थे। यदि आपने येशे दोरजी थोङची का नाम नहीं सुना है, तो 'मौन होंठ मुखर हृदय' अवश्य पढ़ना चाहिए। साहित्य अकादमी से प्रकाशित यह किताब असमीया से हिंदी में अनूदित होकर वर्ष 2017 में आई है। हिंदी के पाठकों के लिए यह एक बड़ी उपलब्धि है जिसे कवि, लेखक एवं अनुवादक दिनकर कुमार ने संभव किया है। संक्षेप परिचयनामा में कहें, तो येशे दोरजी थोङछी एक पहाड़ी लेखक हैं। वे सुदूरवर्ती अरुणाचल प्रदेश के एक ऐसे उपन्यासकार हैं जो मूलतः असमीया में लिखते हैं। कविता एवं नाट्य लेखन में उनकी समान गति है। उनकी अब तक प्रकाशित प्रमुख कृतियों की जानकारी होनी चाहिए, जो हैं-'सोनाम', 'लिङझिक', 'पापोर', 'फुखुरी', 'बाह फुलर गंध', 'मिशिङ', 'शव काटने वाला आदमी' तथा 'मौन होंठ मुखर हृदय'। येशे दोरजी का व्यक्तित्व सुघड़ और कद-काठी प्रभावशाली है। वे मृदुभाषी हैं और उनके चेहरे पर मुस्कान हमेशा होती है। अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित उनकी कृतियाँ मूलतः असमीया भाषा में लिखी गई हैं और वह अरुणाचली मूल के महत्त्वपूर्ण असमीया कथाकार हैं। आदिवासी स्त्री-पुरुष प्रेम की उन्मुक्तता और परिवेश की जटिलता का यथार्थपूर्ण

चित्रण येशे दोरजी थोङ्छी के उपन्यासों में मिलता है, जो पाठक की संवेदना और मर्म को छूते और उनकी स्मृतियों में टँक जाते हैं। कई बार विह्वल पाठक येशे दोरजी थोङ्छी से सीधे संपर्क करते हैं और अपनी दिली बात उनसे साझा किये बिना नहीं रह पाते। सुदूर उत्तर-पूर्व का यह रचनाकार अरुणाचली-असमीया दिलों में बसता है और सभी उनको अपना 'साहित्यिक गार्जियन' मानते हैं। इस अंक में उनकी कहानी 'पुण्य ध्वजा' शामिल है, जो उनकी हिंदी में लिखी और छप रही पहली कहानी है।

अरुणाचल प्रदेश की सुपरिचित लेखिका एवं कवयित्री हैं, मंमाङ दाई। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित मंमाङ दाई आदिवासी स्वातंत्र्य-बोध और अरुणाचली माटी-महक की करीबी लेखिका हैं। ममाङ दाई अरुणाचली लड़कियों-स्त्रियों के लिए 'हिल लेडी' हैं जिन्होंने आईएएस होना नहीं स्वीकार किया। उनकी प्रतिरोधी चेतना का बाँकपन उनको पत्रकार बनने पर बाध्य किया। कई वर्षों तक पत्रकारिता के क्षेत्र से जुड़ी रहीं। ममाङ दाई 'द टेलीग्राफ', 'हिन्दुस्तान टाइम्स', 'द सेंटिनल' से जुड़ी रही हैं। अपने प्रदेश के आकाशवाणी और दूरदर्शन की वह एक ऐसी शख्सियत हैं जिन पर पूरे प्रदेश को नाज है। उनका योगदान राष्ट्रीय स्तर के अंग्रेजी लेखकों में वरेण्य है तथा वे आज भी अपने प्रदेश के कई साहित्यिक एवं पत्रकारीय संगठनों-संस्थानों से जुड़ी हुई हैं। ममाङ दाई अपनी समकालीनता में वैचारिक-बोध के साथ प्रवेश करती हैं। उनके उपन्यास में सजीव चित्रण मिलेंगे, तो कथानक में जीवंत प्रसंग बहुलांश। वह कोशिश करती हैं कि उनके उपन्यास अपनी अरुणाचली गंध लिए हुए पाठकों तक पहुँचे जिसकी आज सख्त जरूरत है। 'आदिवासी लाइव मैटर' पत्रिका में दीप्ति मेरी मिंज ने ममाङ दाई के उपन्यास 'द ब्लैक हिल' के बारे मे लिखा है-"साल 2014 में प्रकाशित किताब 1945 की आज़ादी से पहले उत्तर पूर्व क्षेत्र की कहानी बताती है। यह किताब काल्पनिक लेखन है, लेकिन ये असल घटनाओं पर आधारित है, जो आज के वर्तमान हालातों पर भी सोचने को मजबूर करती है। इसे साल 2017 में साहित्य अकादमी अवॉर्ड मिला।" अभी हाल ही में उनका चर्चित उपन्यास हिंदी में छपकर आया है, 'काली पहाड़ी'। इस किताब की सुचिंतित समीक्षा इस अंक में प्रकाशित की गई है जो मंमाङ दाई के रचना संसार से परिचित कराता है और हिंदी के बृहद हिंदी संसार को उनकी रचनाशीलता से जोड़ता भी है।

अरुणाचल प्रदेश का हिंदी लेखन उर्वर और अत्यंत संभावनाशील है जिसमें पहला नाम जुमसी सिराम जी का है। जुमसी सिराम, अरुणाचली मूल के पहले हिंदी लेखक हैं। अचरज नहीं कि जुमसी सिराम जैसा असाधारण लेखक साधारण तरीके से रहता हो। लेकिन उनकी जीवटता ऐसी कि लेखन के लिए सब कुछ दाँव पर लगा दे और अपनी निज जवाबदारी की भूमिका भी निभाते चले। पर कहे कुछ भी नहीं। सारी कठिनाइयों के बीच जुमसी सिराम लेखन पर बातचीत करते हैं, तो कंठ से अनुभव के तार बजते हैं-निष्कलुष, बेहद आत्मीय। पढ़-लिख कर पद-प्रतिष्ठा पाए लोग भी जुमसी सिराम से मिलते हैं, तो अचरज करते हैं। जुमसी सिराम 'नीनो' की 'मातमुर जामोह' उपन्यास चर्चित रहा है। इस उपन्यास में उन्होंने एक ऐसे गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी के ऊपर औपान्यासिक ढंग से कलम चलाई है जो एक जरूरी दस्तावेज है, एक प्रामाणिक साक्ष्य है। यह उपन्यास मुख्य रूप से आंग्लो-अबोर युद्ध पर केंद्रित है। इस युद्ध के दौरान पूर्वोत्तर का एक

बड़ा हिस्सा प्रभावित हुआ था। खासतौर से 1911 ई. में अंग्रेजी बटालियन के मुखिया नोएल विलियमसन की हत्या ने पूरे भारत में सनसनी फैला दी। उस दिन विलियमसन सहित करीब 44 अंगरक्षकों को मौत के घाट उतार दिया गया था। इतना साहसपूर्ण कृत्य जिस भारतीय ने किया, वे थे-मातमुर जामोह। अरुणाचल प्रदेश के युवा मातमुर जामोह को जबरिया घुसपैठ और धौंस बिल्कुल नापसंद थी। इस तरह की दखलअंदाजी से उनकी आदिवासी चेतना को न सिर्फ ठेस पहुँच रही थी, बल्कि उनकी स्वतंत्रता पर भी अंकुश लग रहे थे। उन्मुक्त प्रवृत्ति और प्रकृति पर अधिकाधिक निर्भरता के कारण आदिवासी समुदाय अन्य किसी भी प्रकार के दबाव अथवा सामाजिक जोर-जबर्दस्ती का शिकार कभी नहीं रहा था। ब्रिटिशों के उत्तर-पूर्व तक पहुँच और पैठ के कारण उनमें अक्सर टकराव की स्थिति पैदा होने लगी थी। अंग्रेजी अफसर की हत्या के पीछे मुख्य कारण आदिवासी गरिमा को पहुँच रही चोट मुख्य रही। जुमसी सिराम ने ऐसे ही एक जरूरी विषय को अपने कथानक के लिए चुना है जिसका नाम है-'मेरी आवाज सुनो'। उनका उपन्यास 'मेरी आवाज सुनो' आदिवासी स्त्री के जज़्बातों को बहुत ही सजीव ढंग से दिखाता है; जीवंत तरीके से चित्रण करता है। इस उपन्यास की कथावस्तु स्थानीयता-बोध के वैश्विक-सूत्र को स्थापित करता है। सामाजिक बंधनों में जकड़ी स्त्री अपनी पीड़ा और वेदना में किस तरह घुटती है तथा अपने जीवन के तमाम संत्रास झेलती है; यह इस उपन्यास का मुख्य प्रतिपाद्य है। लेखक ने गालो जनसमाज की बहुप्रचलित कुरीति 'नेप्प निदा' को अपने उपन्यास का विषय बनाया है, जो आदिवासी आत्मा की अकुंठ मुक्ति का उपन्यास है। इस अंक में 'मेरी आवाज़ सुनो' की समीक्षा जरूरी तौर पर शामिल की गई है।

अरुणाचली लेखिका जोराम यालाम अपने पहले कहानी-संग्रह 'साक्षी है पीपल' के साथ हिंदी लेखन में आईं और आज वह अरुणाचल प्रदेश की महत्त्वपूर्ण आदिवासी विमर्शकार के रूप में समादृत हैं। उनकी अन्य कृतियाँ हैं- 'जंगली फूल', 'गाय गेका की औरतें', 'तानी कथाएँ' आदि। 'साक्षी है पीपल' संग्रह के बारे में वह स्वयं कहती हैं-''यह वृक्ष विराट समाज के एक वर्ग-सा साक्षात खड़ा है, जिनकी संख्या अधिक है। इसी के सामने न्याय होता है, इसी के सामने अन्याय भी होता है, लेकिन यह हर समय खामोश है। यह एक सामूहिक खामोशी है। एक अपराध है। ये एक प्रकार के भयग्रस्त लोग हैं। एक ही वृक्ष में बसने वाले जीवों को भी एक-दूसरे के प्रति अपराध करता देख यह चुप है। फिर भी इसी का सम्मान है! जब समाज के नाम पर व्यक्ति की हत्या होती है तब क्या कहानियाँ नहीं कही जानी चाहिए? ये कहानियाँ रुदन गीत हैं।'' जोराम यालाम स्वतंत्र 'ट्राइबल कोड' को लेकर आंदोलनरत रहीं हैं। उनकी वैचारिक मुहिम में अकेले हो जाने का डर था, लेकिन वह थमी नहीं, रूकी नहीं। वह लगातार देश भर के बुद्धिजीवियों से संपर्क-संवाद करती दिखीं। उनकी माँग है कि भारतीय जनगणना-2021 में आदिवासी जनसमाज के लिए स्वतंत्र रूप से 'रिलिजन' का एक विकल्प हो। जोराम यालाम जिस विचार को गति दे रही हैं, पूरी ताकत से जिस आवाज़ को बुलंद कर रही हैं; वह विचारणीय है। पेशे से अध्यापिका डॉ. यालाम एक जिम्मेदार भारतीय नागरिक हैं। उनकी बात की लेखी हवा-हवाई नहीं कही जा सकती है। उनके उपन्यास 'जंगली फूल' ने उनकी लेखकीय प्रतिबद्धता को न सिर्फ पुख्ता किया है, अपितु अरुणाचली हिंदी लेखिका के बतौर

स्थापित भी किया है। समीक्षित संग्रह 'साक्षी है पीपल' वरिष्ठ संस्कृतिकर्मी और साहित्यकार प्रो. देवराज के प्रोत्साहन तथा रचनात्मक संबल के साथ वर्ष 2012 में ही प्रकाशित होकर आ गया था। आज स्थिति यह है कि इस पुस्तक पर एम.फिल. शोध-कार्य हो चुका है तथा पीएच.डी. का काम भी हो रहा है। इन कहानियों की चर्चा केरल के लाल बहादुर शास्त्री शिक्षा महाविद्यालय के प्रिंसिपल डा. इसपाक अली ने अपनी डी. लिट् में भी किया है। 'साक्षी है पीपल' का परिवेश अरुणाचल प्रदेश का है, लेकिन ये सभी कहानियाँ अपने अंतरावलंबन में आधी आबादी के हक-हकूक की पूरी कहानी है। जोराम यालाम को पढ़ना सहज ही अरुणाचली मन और आत्मा के करीब हो जाना है। इस अंक में जोराम यालाम की पुस्तकों पर गहन चर्चा और आलोचनात्मक विचार प्रस्तुत है, जो पाठकों को अच्छी लगेंगी-यह उम्मीद है। इस अंक की उपलब्धि यह भी है कि जोराम यालाम जी की एक कहानी को भी इस अंक में शामिल किया गया है, जो पाठकों को छुएंगी और संवेदित भी करेंगी।

अरुणाचली कवयित्री और लेखिका जमुना बीनी का नाम बेहद सुपरिचित है। उनके लिए पहाड़ पुरखे की भूमिका में हैं। यह बात उनके कविता संग्रह 'जब आदिवासी गाता है' में मुखर ढंग से ध्वनित हुआ है। परिन्दे प्रकाशन, दिल्ली से वर्ष 2018 में छपे इस कविता-संग्रह को पढ़ना एक ऐसे राज्य के करीब हो जाना है, जिसे लेकर चीन भारतीय संप्रभुता पर आए दिन चोट करता रहता है। इसके उलट यहाँ के रहवासियों में गजब की राष्ट्रीयता है, देशभक्ति है जो मुख्यधारा के फैशनेबुल-नेशनलिस्ट जो कि ठेके के चियरलिडर्स हैं; पर भारी पड़ती है। जमुनी बीनी की पहली किताब 'दो रंगपुरुष: मोहन राकेश एवं गिरीश कर्नाड' नाम से छपी जो कि मूलतः उनके पीएच.डी. शोध-प्रबंध पर आधारित थी। जमुना बीनी अपने लहजे में हिंदी को यूँ बरतती हैं कि आप मुग्ध हों ले। आत्मीयता उनकी खूबी है जिसे वह हमेशा सहेज कर रखती हैं। प्रेम उनके लिए आत्मीयता की घानी है। पूरी गंभीरता संग विचार प्रकट करने का हुनर जमुना बीनी बखूबी जानती हैं जो उनके अनुभव और अध्ययन का हासिल है। पिछले साल इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्राहलय, भोपाल के अंतर्गत कावेरी बुक्स से उनकी न्यीशी लोककथाओं का संग्रह 'उईमोक' नाम से प्रकाशित हुआ है। अन्य रचनाओं में 'अयाचित अतिथि और अन्य कहानियाँ' महत्त्वपूर्ण हैं। जमुना बीनी की रचनाएँ भारतीय भाषाओं सहित अन्य भाषाओं में अनूदित और बेहद चर्चित हुई हैं। इस अंक में जमुना बीनी जी की पांच कविताएँ शामिल हैं।

युवा कवि तारो सिंदिक 38 साल के अरुणाचली साहित्यकार हैं। 'अक्षरों की विनती' अनन्य प्रकाशन से प्रकाशित उनका पहला कविता-संग्रह है। अपने इर्द-गिर्द हो रहे बदलाव या खुद संग अन्य लोगों द्वारा किए जा रहे बर्ताव को तारो शिद्दत से महसूस करते हैं। इसी छटपटाट संग तारो सिंदिक हिंदी कविता की बारहखड़ी में प्रवेश करते हैं, अवतरित हरगिज नहीं होते। वे अपनी अनगढ़ता से वाकिफ़ हैं। अपनी ही कविता को शऊर संग बरतने में वे खुद को असफल मानते हैं। गोकि कुल संकोच के बावजूद वह कविता रचते भी हैं, तो मनुहार के लहजे में। विनती के स्वर में। उनकी साफगोई अरुणाचल प्रदेश के जन-जन की अनुकृति है जिसमें जनजातीय रचाव-बनाव का खुरदुरापन और अनगढ़ता बेशुमार है, लेकिन उनका कहन

अरुणाचली हिंदी का प्रतिनिधि है जिसमें नमने के लिए अरुणाचली दिलोदिमाग होना जरूरी है; क्योंकि यहाँ दिल बैठने की जगह लोग बैठते हैं। आपसदारी के रिश्ते में सामूहिकता संग निवास करते हैं। उनका दूसरा प्रकाशित काव्य-संग्रह 'फिर आना तुम' है। 'फिर आना तुम' के फ्लैप पर तारो सिंदिक के गुरुवर और इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापक अमरेन्द्र त्रिपाठी लिखते हैं-''तारो एक दार्शनिक और विचारक कवि हैं। प्रकृति के प्रति गहन राग उन्हें समाज से दूर नहीं ले जाता, बल्कि उसके प्रति और अधिक जिम्मेदार बनाता है। समाज और व्यक्ति का भटकाव कवि को विचलित करता है। "तारो सिंदिक की पहली कृति को साहित्य अकादमी का युवा कवि पुरस्कार प्राप्त हुआ है। अरुणाचल का यह युवा कवि अपार संभावनाओं से लबालब है और इस कवि के पास एक अपनी विकसित की हुई दृष्टि भी है जो उसे विचारों के खेमे में आत्मनिर्भर और विवेकी बनाती है। इस अंक में तारो सिन्दिक की लिखी कहानी को हम शामिल कर रहे हैं जो हमारे पाठकों के लिए किसी उपहार से कम नहीं है।

अरुणाचल प्रदेश के भाषाई संसार में 'मोनपा लोक-साहित्य' की ज्ञाता डॉ. सोनम वाङमू ने मोनपा लोक साहित्य को सामने लाने का रचनात्मक उपक्रम किया है। अरुणाचल प्रदेश में मोनपा जनजाति भाव-संवेदना के स्तर पर बेहद मुखर है। जबकि स्वभाव एवं व्यवहार के स्तर पर मोनपा लोग अतिशय विनम्र हैं। सलीकेदार उनकी यह प्रकृति सहज ही आपको आकर्षित करती है तथा हम उन्हें और निकट से जानने को आकृष्ट होते हैं। बुद्ध की शांत और शीतल छवि को वे अपने हाव-भाव और सत्कार-प्रेम के तौर-तरीकों से साकार करते मालूम होते हैं, जो शोभनीय है। तवाङ परिक्षेत्र में उनका रहवास काफी पुराना है तथा प्रकृति से उनकी अंतरंगता सर्वाधिक देखी जा सकती है। उनकी चेतस संस्कृति में लोक-साहित्य बहुलांश मात्रा में है। सोनम वाङमू अपनी जनजाति के लोक-साहित्य को जुटाती और जोड़ती हुई उसे जिस पुस्तक के रूप में संग्रहीत करती हैं; उसका नाम है-'मोनपा लोक साहित्य'। सोनम वाङमू की मेहनत और रचनात्मक अवदान का मोनपा समाज ऋणी रहने वाला है, जिसके लिए उन्हीं की भाषा में यह कहना उचित होगा-'दुइछोत रनपुर फन तोजुम'। यानी समय आने पर काम आएगा। दरअसल, लोक-साहित्य सृजन का सच्चा संसार है जिसमें वाचिक अभिव्यक्ति की उपस्थिति सार्थक कही जाती है। अरुणाचल प्रदेश की जनजातीयबहुल आबादी इस लोक-साहित्य में जीती और अपने उत्स के साथ मौजूद रहती आई है। गोकि लोक-साहित्य जीवन की मौजूदा धुरी पर अतीत से भविष्य तक की यात्रा करता है। वास्तव में लोक-साहित्य अनुभव आधारित लोक स्मृति का कोठार है जिसमें भाषा, लय, छंद, राग, थिरकन, नृत्य, उतार-चढ़ावदार लहजा, संगीतात्मकता, मिथकीय चेतना, सामूहिकवृत्ति लाजवाब है। इस अंक में सोनम वाङमू भी शामिल हैं और अपने लेख में मोनपा भाषा और हिंदी के बीच एक 'पुल' बनाती दिखती हैं।

अरुणाचल प्रदेश की लेखिका मोर्जुम लोयी के उपन्यास 'मिनाम' ने सबका ध्यान आकृष्ट किया और उनकी दूसरी प्रकाशित गालो जनजाति के लोकगीतों के संग्रह 'ननम पोनू' ने उनकी उपस्थिति और लेखकीय उपस्थिति को मजबूती प्रदान की है। पेशे से प्राध्यापिका मोर्जुम लोयी को पता है कि आने वाली पीढ़ी के लिए इसके क्या मायने और महत्त्व हो सकते हैं। कहना न होगा कि लोक-साहित्य का भारतीय

लोकवृत्त किसी 'पट्टी' विशेष तक नहीं सीमित है। वह लोक-मन की रंगरेज मालूम देती हैं। उनके कहन में अल्हड़ भावनाएँ और गाढ़ी रंगत की संवेदनाएँ दिखाई देती हैं। लोकगीत अपनी जनजातीय चेतना के वास्तविक संवाहक हैं जिनकी गूँज-अनुगूँज अरुणाचल प्रदेश की गालो जनजाति में स्पष्ट लक्षित की जा सकती है। 'योई बाबो' की अंतिम कुछ पंक्तियाँ आपके समक्ष रखना उचित होगा-''हीरअ गो इरमेन लाजुके, ननम सीरे गो इरमेन लाजुके, योई बाबोआ होई।/मेबाम गो बाम्मेन लाजुके, पोनु मोबाम गो बाम्मेन लाजुके, योई बाबोआ होई।/टाजेना ईतो लाके, आजेन गाद्दा ईतो लाके, योई बाबोआ होई।।'' गालो लोक-जगत का यह मनोरंजन गीत अपने भावार्थ में जिस मर्म को उद्घाटित करता है, वह जड़बुद्धि या जड़मति के लिए उत्तम संदेशा है। मोर्जुम लोयी शब्दार्थ-संबंध के साथ कहती हैं-''इस जड़बुद्धि में प्रेम की मीठी वाणियों से ऊर्जा का संचार कर देती हूँ। ताकि हम मिलकर समाज में बदलाव ला सकें, इसकी जड़ता को खत्म कर एक नवनिर्माण कर सकें। चलो मिलकर मन के सोए हुए संगीत को जागृत करें। संगीत के तारों को छेड़कर उससे एक गीत बनाएँ। ताकि इस सोए हुए संसार को, समाज में फैली हुई अराजकता को, भेद-भाव सबको दूर कर सकें। चलो, मिलकर संगीत के सुरों से माहौल को संगीतमय बना दें।'' इस संग्रह में लोकगीतों की बहुलता ही नहीं है, बल्कि विविधता भी अनेकानेक हैं। इसमें गालो जनजाति के जल-आह्वान संबंधी इतिहास से जुड़ा एक लोकगीत संकलित है। जल की देवी एक मिथकीय स्त्री है जिनकी सुमिरन में यह कहकर बुलावा भेजा गया कि हे देवी, आपके बिना यह संसार सूना है। जमीन बंजर हो गई है। मनुष्य, पशु, पक्षी सब प्यासे हैं। हमें जीवनदान देने के लिए अपना दर्शन करा दो। आगे का प्रसंग रोचक है और इस दुनिया के हरे-भरे यानी हरीतिमायुक्त होने का मुख्य कारण भी। यह अंक मोर्जुम लोयी की रचनात्मक उपस्थिति का साक्षी बना है।

भारत का लोक बहुरंगा और उसकी विविधता इंद्रधुनुषी है। इस लोकायत की परंपरा में लोक-साहित्य बिना किसी भेदभाव के आत्मीयता के संबोधक हैं। अपनी प्रकृति में पुरखों की वंशावली का सूचक हैं। आगे बढ़ने का संबल देने में लोककथाएँ अगुवा का काम करती हैं। देखें तो, आदिवासी लोककथाओं का संसार इस मायने में बहुत बड़ा है। तुम्बम रिबा 'लिली' की इसी विषय पर प्रकाशित पुस्तक 'काताम' अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, जिसमें अरुणाचली समाज की बहुचर्चित लोककथाएं संकलित हैं। तुम्बम रिबा 'लिली' पेशे से प्राध्यापिका हैं और अपनी दिनचर्या में बेहद गतिशील रहती हैं। उनका उपन्यास 'उस रात की सुबह' पठनीय है। यह उपन्यास अरुणाचली स्त्रियों के पिछले अतीत को वर्तमान सत्य के साथ बखूबी उजागर करता है जिसमें पहाड़ी स्त्रियों की पीड़ा और संत्रास का संवेदनशील वृत्तांत है।

इसी क्रम में गुम्पी डूसो का नाम शामिल है जो अरुणाचल प्रदेश की ऊर्जावान लेखिका हैं जिनका 'यापोम' नाम से गालो लोक कथाओं का संग्रह प्रकाशित है। इस संग्रह में एक दिलचस्प लोककथा है जो पारस्परिक अन्योन्याश्रित संबंध होने का संकेत देती है और आदिम लोककथाओं के माध्यम से इस मिथकीय सचाई को पुख्ता करती है-"गालो समाज में यह कथा प्रचलित है कि-एक बार सुंदर युवती के रूप में आबोतानी से कोसूक (यानी सूखी पत्ती) का विवाह हो जाता है। विवाह के बाद उनके घर एक नन्हा

शिशु जन्मा, वह शिशु तापेक (जोंक) के रूप में पैदा हुआ। बच्चा चाहे कितना ही जहरीला क्यों न हो तथा देखने में कितना ही भयंकर क्यों न हो, अपने माता-पिता के लिए दुलारा ही होता है। मानव-रूपी उस सूखी पत्ती में स्तनपान के लिए कुछ नहीं होता है। नन्हें शिशु को भूखा-प्यासा देखकर आबोतानी उदास हो जाते हैं। जीव-जंतु, पशु-पक्षी इत्यादि सभी की व्यथा को वह पहला मानव समझते थे। तभी तो प्रकृति की हर एक सृष्टि उनसे बातें करती थी और उनके लिए मानव-रूप धारण करती थी। ऐसी स्थिति में आबोतानी के दिमाग में एक उपाय सूझता है। तेज धारदार किसी वस्तु से तानी अपने शरीर का एक अंग हल्के ये काट लेता है और जोंक को उस जगह खून चूसने के लिए छोड़ देता है। तभी से यह समुदाय ऐसा मानता है कि जोंक इसी कारण मानव का खून चूसता है।" ऐसी दिलचस्प कथाएँ अरुणाचल प्रदेश के मिथकीय इतिहास को अधिक दिलचस्प बनाती हैं जिनमें मूल्य आधारित जीवन और मानवीयता जबरदस्त है।

अरुणाचल प्रदेश की कवयित्री नोमी मागा गुमरो हिंदी में लिखती हैं। उनकी कविताओं में आदिवासियत की संवेदना स्फूट है जो छूती और अंतस में रच-बस जाती है। अरुणाचल प्रदेश की नोमी मागा गुमरो महसूस करती हैं कि अनुभूति से अभिव्यक्ति की यात्रा आसान नहीं है, लेकिन उसे जज्ब किये रखना और भी कठिन है। अरुणाचल प्रदेश लिटरेरी सोसायटी से प्रकाशित काव्य-संग्रह 'एहसास' नोमी मागा मुगरो की पहली कृति है। सहज और सरलतम ढंग से नोमी अपनी बात ऐसे रखती हैं जैसे वह साझेदारी में कोई बात सबके सामने रख रही हों। कोई कृत्रिम बेल-बूटे नहीं। कोई अतिरिक्त सजावट या मेकअप नहीं। जो और जैसा वह महसूस करती हैं, बस उसी एहसास को सबसे बाँटने का उपक्रम करती दिखती हैं। उनकी कविता अपनी इसी साफगोई में सचबयानी का माद्दा रखती है-''मौत का मंजी देखकर,/डर का सफर बढ़ता है/किसी न किसी बहाने से/अक्सर अपने/चपेट में ले लेता है।'' अपना यह काव्य संग्रह नोमी मागा गुमरो ने आमा और आबा को समर्पित किया है। इस संग्रह की भूमिका राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त और पद्मश्री सम्मान व साहित्य अकादमी पुरस्कार से विभूषित येशे दोरजी थोंग्ची जी ने लिखी है। वह नोमी की चंद पंक्तियाँ उल्लेख करते हैं-''कलम, तुमसे यह गुजारिश है/हर सच को उजागर करो/हर एहसास को बयां करो।'

हिंदी के नवलेखन क्षितिज में रबोम बेलो, दोरजी लोन्पु, रेमोन लोंग्कु, आईनाम इरिंग, तुनुङ ताबीङ, जोम्यिर जीनी, वांगो सोसिया जैसी प्रतिभाएं समादृत हैं। इनकी रचनात्मकता और उनकी सद्यःप्रकाशित रचनाएँ अरुणाचल प्रदेश में हिंदी लेखन का नवविस्तार कहा जाना चाहिए जिनकी रचनाधर्मिता और लेखकीय प्रतिबद्धता चकित करती हैं और पाठकों को पढ़ने के लिए आमंत्रित भी।

अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित इस अंक में ऐसी कई रचनाएँ शामिल हो रहीं हैं जिन्हें 'कंचनजंघा' पत्रिका के पाठकों के लिए विशेष रूप से संजोया गया है या बड़ी निहोरा से प्राप्त किया है। आदिवासी माटी में सृजन के फूल खिलाने वाले प्रो. देवराज मेरे अभिभावक हैं। वह मेरी सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना के नाविक हैं। उनके विश्वास ने मुझे इस अंक को इस रूप में प्रस्तुत करने का भरोसा दिया है। यह और बात है

कि मैं उनके भरोसे पर कितना खरा उतार पाया हूँ, यह पाठक और आप सुधिजन तय करेंगे। इस अंक में प्रो. देवराज के दो लेख पाठकगण पढ़ सकेंगे जो इस पत्रिका का हासिल है।

संत साहित्य के मर्मज्ञ और केंदीय हिंदी संस्थान के पूर्व निदेशक रहे प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय जी का अरुणाचल प्रदेश से गहनतम नाता रहा है और उन्होंने अपने अकादमिक जीवन का एक लंबा हिस्सा यहाँ अध्यापन करते हुए बिताया है। यह अंक प्रो. पाण्डेय के आत्मीय संस्मरण से सुभाषित है जिसे पढ़ना रोचक और आह्लादकारी होगा। इसी कड़ी में प्रो. हरीश कुमार शर्मा जी का लेख शामिल है। प्रो. शर्मा ने अपने आलेख में प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय जी के गतिशील व्यक्तित्व और रचनात्मक उपलब्धियों पर लिखा है, जिसे पाठक मनोयोग से पढ़ेंगे और प्रसन्न होंगे। दयाराम वर्मा जी का मैं विशेष रूप से आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मेरे आग्रह को सर आँखों पर रखा और अपना लिखा यात्रा-वृत्तांत कंचनजंघा के पाठकों के लिए भेजा। उन्होंने अरुणाचल प्रदेश में अपना लंबा समय व्यतीत किया है और हाल ही में एक साहित्यिक सम्मलेन में भागीदारी करने अरुणाचल प्रदेश आए, तो पुरानी यादें ताजा हो गईं।

मेरी बौद्धिक और चारित्रिक निर्मिति के नियामक प्रो. अवधेश नारायण मिश्र मेरे लिए प्रातःवंदनीय हैं। प्रो. मिश्र और डॉ. मीना कुमारी का आलेख इस अंक में होना मेरी उपलब्धि है। यह आलेख अरुणाचल प्रदेश में भाषा-शिक्षण की प्रविधि का शोधपरक विश्लेषण विस्तारपूर्वक प्रस्तुत करता है। मूलतः अंग्रेजी और असमीया में लिखने वाली अरुणाचल प्रदेश की लेखिका अजन्ता जी ने अपनी कहानी मुझे भेजी जो इस अंक के लिए अनुपम भेंट है। इस कहानी को राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के शोधार्थी माधुर्ज्य कमल हजारिका ने हिंदी में अनूदित किया है, आप दोनों का दिल से आभार। मैं डॉ.ज्योतिष पायेङ जी को याद करना चाहूँगा जिन्होंने अरुणाचल प्रदेश की बहुसांस्कृतिक और भाषाबहुल छवि को अपने विस्तृत आलेख में अनुवाद-अध्ययन के माध्यम से उजागर किया है, आपका दिली आभार। सचेत अध्येता और गतिशील व्यक्तित्व के धनी डॉ. मुनीन्द्र मिश्र जी ने अपना लिखा एक ऐतिहासिक नाटक 'हारमती निर्वासन' इस अंक को उपलब्ध कराया है, आपका हृदय से आभार। मेरे आग्रह को मानते हुए मियाजी हज़ाम, दोयिर एते, गोकेन गेई, गंखु सुमन्याँ जैसे प्रबुद्ध आत्मीयजनों ने इस अंक के लिए अपनी रचनाएँ मुझे उपलब्ध कराई, आप सबका समवेत आभार और दिल से धन्यवाद।

पुनश्च, अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित यह विशेष अंक प्रो. देवराज के मार्गदर्शन और डॉ. प्रदीप त्रिपाठी के आदर्श प्रेम का परिणाम है। सिक्किम विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग के अमज़द हुसैन ने इस अंक का शोभनीय और आकर्षक मुख्य आवरण बनाया है। 'कंचनजंघा' पत्रिका के वेबसाइट मॉडरेटर और तकनीकी पक्षों के कुशल प्रबंधक गोविंद जी ने इस अंक की ऑनलाइन सुलभता सुनिश्चित की है। साथी और अग्रज पंकज कुमार सिंह जी का दिल से आभार जिन्होंने इस अंक के अभिविन्यास को व्यवस्थित रूप और क्रम प्रदान किया है। इस समिधा में कई-कई लोगों की शुभाकांक्षा, स्नेह और आशीर्वाद जुड़ा है, सबका आभार, सभी का अभिनंदन।

मैं बार-बार आदिवासी समाज की प्रतिबद्धता और प्रकृति के साथ के तादात्म्य को दुहराना चाहता हूँ- अरुणाचल प्रदेश के लोग जिमी-जमा की संतान हैं। आबोतानी उनके पुरखा हैं, तो दोन्यी-पोलो, रांग्फ्रा, नानी इंतैया, कीने नाने, मोपिन, न्योकुम, साक्षात् बुद्ध इत्यादि देवी-देवताएँ। लोक-साहित्य उनकी स्वर-लहरी है, जिनकी लहरें नदी के रूप में सदानीरा बहती और 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' शैली में नया-पुराना होती हैं। यह धरती 'ॐ माने पेमे हुंग' की जाग्रत ध्वनि से गुंजायमान है। अरुणाचली भाषा और बोलियाँ भारतीय ज्ञान परंपरा का आद्यबिंब और पुरखाई कोठार हैं। अरुणाचली समाज उत्सवधर्मी और अनुष्ठानप्रिय है। जनजातीय समरसता और प्रकृतिजीविता इस मनोरम भूमि की पहचान और वास्तविक मूल्य-बोध है। यहाँ के सामूहिक इतिहास-दर्शन में मिथकीय थाप है, तो आदिवासी लोक-विश्वास वाचिक परंपरा में अभिव्यक्त और जीवंत होते दिखाई देते हैं।

अरुणाचली हृदय की विराटता और उसकी आंतरिक सूक्ष्मता को 'लघु भारत' कह समेट लेना अपर्याप्त ही होगा, यह जानते हुए भी अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित यह विशेष अंक आप सबके समक्ष हम उपस्थित कर रहे हैं। इस अंक में 20 से अधिक शोधपरक लेख हैं। 20 महत्त्वपूर्ण उपखंड हैं। यथा: अंत:करण का आयतन, पहाड़ी कोठार से, घाटियों का स्वर, भीतरी पाट से, भाषा-चेतना, भाषा-शिक्षण, कहानी (मूल हिंदी में लिखी हुई और हिंदी में अनूदित), कविताएँ (मूल हिंदी में लिखी हुई और हिंदी में अनूदित), स्त्री-बोध, आदिवासी-दर्पण, यात्रा-वृत्तांत, गाँव-ज्ञान, कृति-संधान, शोध-वातायन, संस्मरण, लोकश्रुति नाट्य, सिने-साक्षात्कार, पुस्तक-समीक्षा इत्यादि। इस अंक में विविधता का कलरव है। सामाजिक-सांस्कृतिक भूगोल का खुला वातायन है।

अतएव, यह सबकुछ संभव और साकार कर पाने के संदर्भ में एक बात कहना जरूरी है-मेरे आत्मीय मित्रों जिसमें मेरे अपने विद्यार्थी और शोधार्थी अधिक हैं; ने इस अंक के मायने को समझा और अपनी रचनाएँ 'कंचनजंघा' पत्रिका को भेजी-आपका तहेदिल से आभार। दरअसल, हमारी कोशिश रही है कि हम अरुणाचल प्रदेश पर केंद्रित इस विशेष अंक के बहाने एक सहयात्रा शुरू करें, जिसमें पूर्वोत्तर के सभी राज्य एक क्रम में जुड़ते चले जाएँ। इस परिकल्पना का पहला कदम आप सबको समर्पित है...

(राजीव रंजन प्रसाद)